विशद वर्ण से पायें ज्ञान

क

त

अ

रचयिता

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108

विशदसागरजी महाराज

आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज

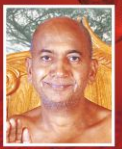

आचार्य श्री भरतसागर जी महाराज

आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

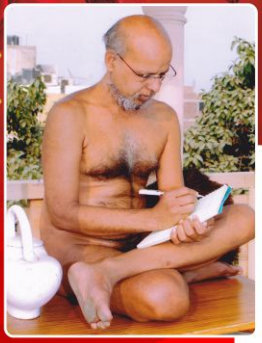

प. पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशद सागर जी महाराज

पूर्व नाम - रमेश चन्द जैन

(पिता - स्व. श्री नाथू राम जी माता - श्रीमति इन्दर देवी जैन)

जन्म - चैत्र कृष्ण चतुर्दशी, 11 अप्रैल, 1964, कुपी-छतरपुर (म.प्र.)

ऐलक दीक्षा - मार्गशीर्ष शुक्ल पंचमी, 18 दिसम्बर, 1993, श्रेयांसगिरी-पन्ना (म.प्र.)

मुनि दीक्षा - फाल्गुन कृष्णा चतुर्थी, 8 फरवरी, 1996, द्रोणगिरी-छतरपुर (म.प्र.)

आचार्य पद - बसंत पंचमी, 13 फरवरी, 2005, मालपुरा-टोंक (राज.)

मुनि 108 श्री विशालसागरजी महाराज

आर्यिका 105 श्री भक्ति भारती माताजी

क्षुल्लिका 105 श्री वात्सल्य भारती माताजी

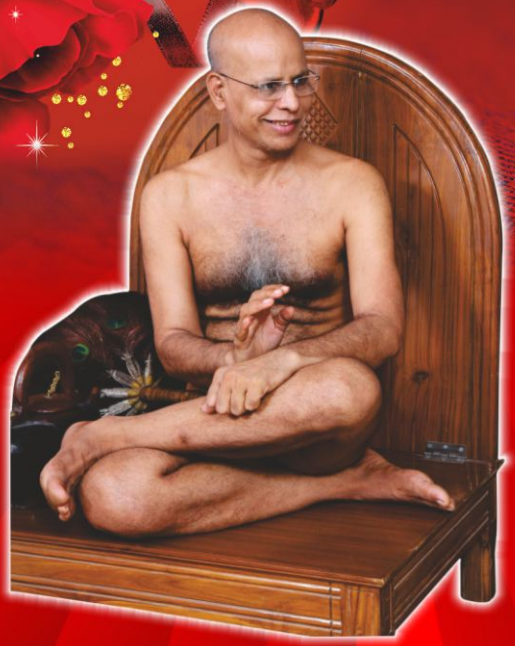

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

अर्थ सहयोगी

BY AIR MAIL
PAR AVION

प्रदीप इण्डस्ट्रीज

K. 58/53, बारा गणेश, वाराणसी - 221001 (उ.प्र.)

फोन : (0542) 2441344

मो. 9415265824, 9450964067

अ

से अदब करो।

अदब हमें सिखाता है -
बड़ों की इज्जत कीजिये,
कड़वी बात का जवाब मिठास
से दीजिये, गुस्सा आने पर
चुप रहिये।

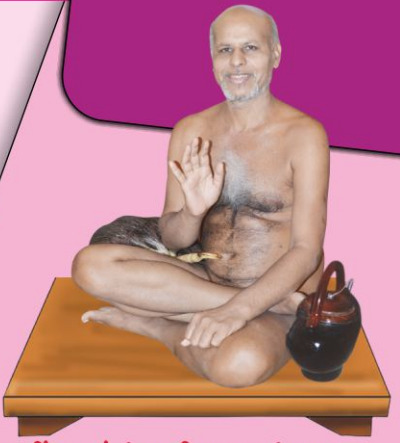

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

जमाने को बदलने का विशद दम रखते हैं।
हम अपने हाथ में बेवाक कलम रखते हैं।।
'अदब' से शीश झुकाते हैं वहाँ पर लोग।
वीतरागी संत जहाँ अपने कदम रखते हैं।।

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

कब ढली शाम कब हुआ सबेरा जान नहीं पाता ।
मोह से मोहित जीव आत्म तत्त्व को मान नहीं पाता ।।
'आत्मविश्वास' खोने वाले दुनिया में विशद ।
इंसान स्वयं अपने आपको पहचान नहीं पाता ।।

आ

आत्मविश्वास रखो

आत्मविश्वास हमें सिखाता है
जब सफलता के सारे द्वार बन्द
होने लगें तब भी विश्वास रखो
कि कोई न कोई एक द्वार
अवश्य खुला होगा ।

इ

इबादत करो ।

इबादत की क्लास सिखाती है
1% इबादत, हमारी 99%
मेहनत पर पॉलिश चढ़ा देती है ।

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

पता नहीं इंसान किन ख्यालों में खोता है ।
बाहर में जागता है किन्तु अन्दर में सोता है ।।
विशद 'इबादत' करना नहीं सीखा जिसने ।
वह सब कुछ पाकर के भी हमेशा रोता है ।।

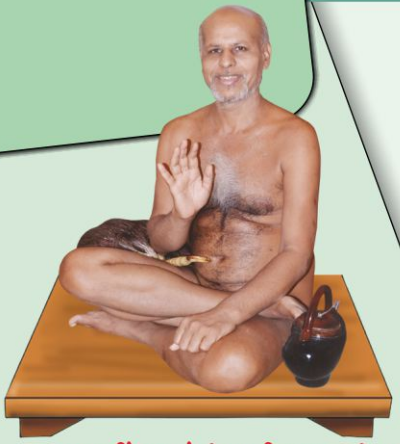

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

जर्मी आसमां के फर्क को जानते हैं हम ।
लरज़ते होंठों की हर जुबाँ पहचानते हैं हम ।।
'ईमानदारी' से जो जिन्दगी जीते हैं ।
उन्हें ही विशद सच्चे इंसान मानते हैं हम ।।

ई

से ईमानदार बनो ।

ईमान का उसूल है -
कभी इतने बेईमान मत बनो,
कि खुद और खुदा
की नजरों से
गिर जाओ।

उ

से उत्साह रखो ।

उत्साह की सीख है - यह एक ऐसा जादुई चिराग है, जो संकटों के अंधेरे में भी हमें पार निकलने की रोशनी देता है ।

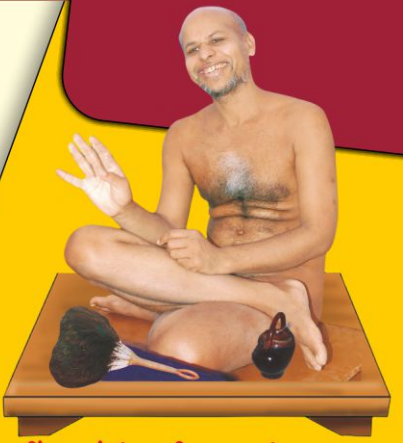

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

चाँद सितारों से आबाद है बस्ती मेरी ।
बंद मुट्ठी में है आसमां ये है हस्ती मेरी ।।
विशद 'उत्साह' से जीना सीखा है हमने ।
तूफां से टकराने को बनी है ये कश्ती मेरी ।।

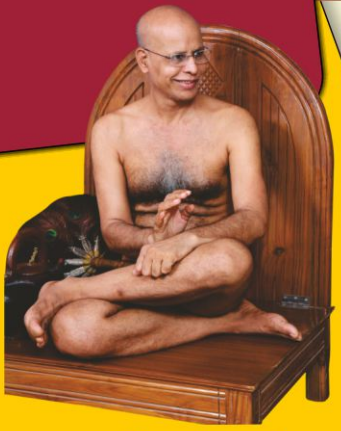

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

जिन्हें देख चलते हुए लोग भी ठहर जाते हैं ।
काँटे भी राह में फूल बनके सँवर जाते हैं ।।
सज़दे में खड़ी रहती हैं आँधियाँ जिनके ।
विशद 'ऊर्जावान' जहाँ से गुजर जाते हैं ।।

ऊ

से ऊर्जावान बनो ।

ऊर्जा का सिद्धान्त बताता है- अभिनव को नया इतिहास बनाने में ज्यादा देर नहीं लगती । बस जरूरत है तो सिर्फ भीतर की ऊर्जा को जगाने की ।

ए

से एकता रखो।

एकता सिखाती है -
0 की कोई कीमत नहीं होती,
पर यदि उससे पहले 1 की
एकता लगा दी जाये,
तो हर शून्य की कीमत
10 गुना बढ़ जाती है।

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

जंगल की कटाई में हाथ लकड़ी का रहता है।
बाँट खरे हों तो क्या ? तुलाई में फर्क तखड़ी का रहता है ।।
'एकता' बनाकर रखो विशद अपने जीवन में।
जाल की बुनाई में साथ मकड़ी का रहता है ।।

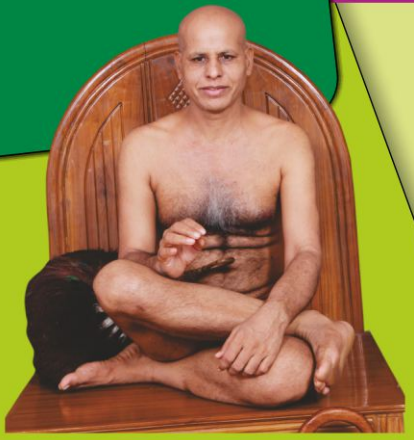

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

जुल्म जमाने के सहकर भी ईमान रखते हैं ।
सब कुछ लुटाकर भी धर्म का ज्ञान रखते हैं ।।
'ऐश्वर्यवान' वे ही होते हैं विशद दुनिया में ।
जो स्वयं अपने कर्त्तव्यों की पहचान रखते हैं ।।

ऐ

ऐश्वर्यवान बनों

ऐश्वर्य का सिद्धान्त है -
जीवन को जीने के लिए
धन पहली अनिवार्यता है,
पर अच्छा स्वभाव, मधुर भाषा
और विनम्र व्यवहार
धन से भी ज्यादा कीमती हैं ।

ओ

ओजस्वी बनो

ओजस्विता की ताकत बताती है -
अपनी कलम और जुबान को
इतना प्रभावी बनायें
कि आपसे लोगों को सूरज
की रोशनी मिले ।

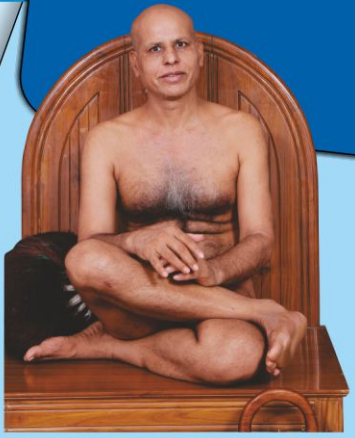

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

जमाने को हमने ही चलना सिखाया है ।
दरिया को हमने ही मचलना सिखाया है ।।
विशद 'ओजस्वी' होकर हमारे साथ चलकर देखो ।
जिन्दगी में हमने ही सम्हलना सिखाया है ।।

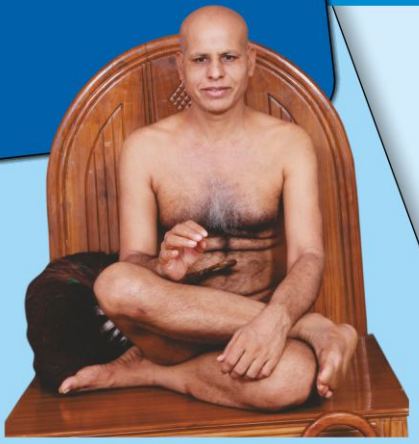

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

कभी महावीर का संदेश बनकर जिये हैं ।
कभी गीता का उपदेश बनकर जिये हैं ।।
हमने हमेशा सॅवारी है विशद जिन्दगी 'औरों' की ।
'विशद' हम शहीदों का भेष बनकर जियें हैं ।।

औ

औरों की सेवा करो ।

सेवा सिखाती है -
किसी नेत्रहीन को रास्ता
पार करा देना और
घायल को अस्पताल पहुँचा
देना, किसी तीर्थ यात्रा
के समान है ।

अं

से अंग प्रदर्शन मत करो।

अंगप्रदर्शन की सीख है -
अंग प्रदर्शन करना
बैल को सींग
मारने के लिए
न्यौता देने
के समान है।

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

देह के रिश्ते देह से बन जाते हैं ।
पर कितने लोग हैं जो इन्हें निभाते हैं ।।
'अंग प्रदर्शन' इंसान की कमजोरी है विशद ।
इसलिए वे रिश्ते शीघ्र ही टूट जाते हैं ।।

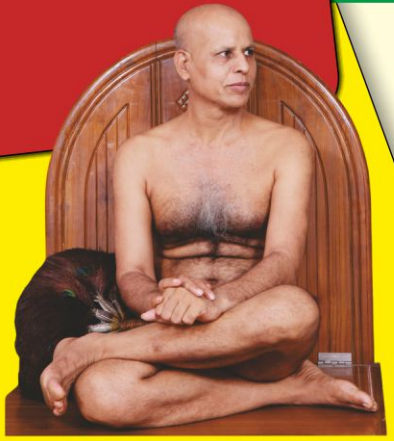

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

चाँद सूरज की तरह मुझे ढलना नहीं आता ।
समन्दर की तरह मुझे मचलना नहीं आता ।।
विशद 'सत्कर्म' करना हमारी आदत है ।
व्यर्थ समय गँवाने को यूँ ही टहलना नहीं आता ।।

क

से कर्म करो ।

कर्मयोग सिखाता है -
पहले क आता है
फिर ख, पहले कीजिए
फिर खाईये और
कर्मयोग से
जी मत चुराईये ।

ख

से खरे बनों ।

खरे का मतलब है -
जीवन में इतने खरे बनो
कि लोग सोने और हीरे से
ज्यादा आपकी कीमत
आँकें ।

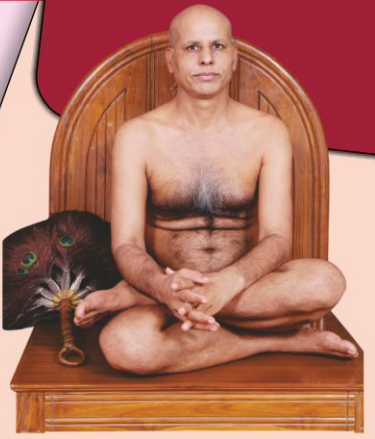

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

ऐसे बदलने लगे हैं लोग आस-पास के ।
गर्मी से पत्ते पीले पड़ने लगे हैं पलाश के ।।
जिनके उसूल 'खरे' हैं विशद जीवन में ।
वे इंसान ही काबिल हैं विश्वास के ।।

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

इंसान को यदि अपना खुद का भला चाहिए ।
तो अपनों से दुआ सलाम का सिलसिला चाहिए ।।
जिन्दगी में 'गरिमा' रखकर जीना होगा विशद ।
नफरत को प्यार में बदलने की कला चाहिए ।।

ग

से गरिमा रखो ।

गरिमा हमें बताती है-
सामने वाला गीदड़ की तरह
पेश आया तो क्या हुआ,
हमें शेर जैसी गरिमा
बनाये रखना चाहिए ।

घ

से घमण्ड मत करो।

घमण्ड उस सोडा वाटर की शीशी की तरह है, जो न तो दूसरों की अच्छाईयों को हमारे अंदर आने देती है और न ही भीतर की बुराईयों को बाहर जाने देती है।

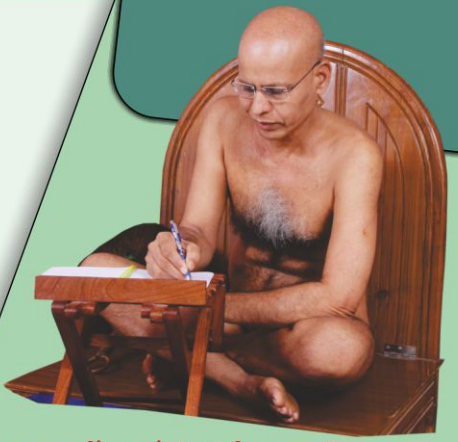

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

दोस्ती में कुछ लोग जो छल किया करते हैं।
बेवजह अपनों से विशद बदले लिया करते हैं।।
'घमण्ड' मत करो अपनी शोहरत के नागों का,
वर्ना उनके तो हम फण कुचल दिया करते हैं।।

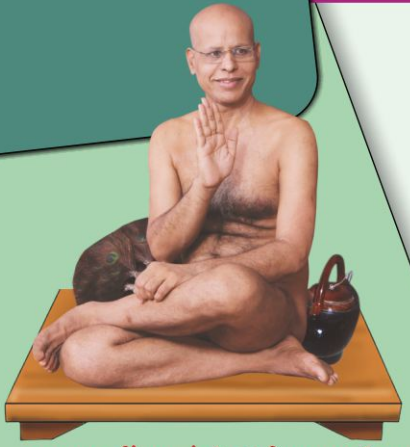

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

जो इंसान गंगा नहाकर आये हैं ।
वे सोचते हैं हम पाप बहाकर आये हैं ।।
'चारित्रवान' बनो विशद जहाँ में वरना ।
पायेंगे वही वे यहाँ जो दौलत कमाकर आये हैं ।।

च

से चारित्रवान बनों ।

चारित्र हमें सिखाता है -
आपका Character आपके जीवन
की सबसे मँहगी दौलत है, इसे
जीवन में करने Less करने की
बजाय करने Add का
जज्बा रखिये ।

छ

से छलो मत ।

छल का एक ही सिद्धान्त है -
छल आता है तो
4 दिन की खुशियाँ देता है
पर पकड़ा जाता है तो
40 साल बरबाद कर देता है ।

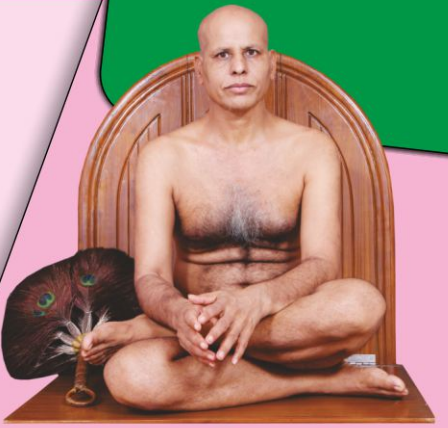

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

आइने से डरकर आप कहाँ जाओगे ।
अपना चेहरा बदलकर आप कहाँ जाओगे ।।
किसी को 'छलो' मत ऊपर वाला सब देखता है।
विशद अपने पापों से बचकर कहाँ जाओगे ।

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

हमारे रहते किसी के जीवन में कोई ग़म नहीं होंगे ।
हमारी यादें रहेंगी दुनिया में, पर हम नहीं होंगे।।
'जलो मत' देखकर औरों की शान शोहरत।
औरों को देखकर जलने से कष्ट कभी कम नहीं होते ।।

ज

जलो मत।

किसी को आगे बढ़ते देखकर
उसकी केकड़े की तरह
टाँग खिचाई मत करो ।
मछली की तरह छलांग लगाओ
और आगे बढ़ो ।

झ

झगड़ो मत ।

झगड़ा यही सिखाता है -
जब प्रेम करने के लिए भी
100 साल की जिन्दगी भी
छोटी पड़ रही है,
तो झगड़ों में उलझाकर
इसे और छोटा क्यों किया जाये ?

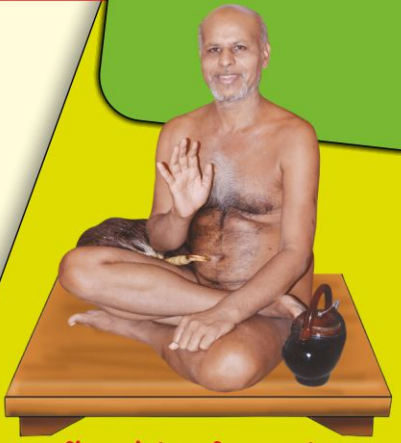

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

जिन्दगी में ऐ वन्दे ! कोई तो नेक काम कर ।
रखना हर कदम अपना गिरेबान देखकर ।।
नफरत कर 'झगड़ने' का अंजाम अच्छा नहीं है विशद ।
देखना है तो देख आईने पर पत्थर फेंककर ।।

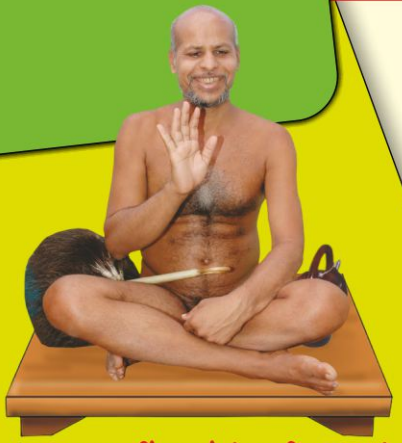

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

बात करो इस तरह की कोई नाराज न हो ।
चोट करो इस तरह कि कहीं आवाज न हो ।।
'टकराओ' नहीं जिन्दगी में किसी से विशद ।
चाहे तुम्हारे कदमों में तख्त हो या ताज हो ।।

ट

ट से सीखिए-टकराओ मत ।

टकराव की आहट होते ही यदि समझदारी से काम लिया जाये तो दुनिया की बड़ी से बड़ी आग भी एक प्याले पानी से बुझाई जा सकती है ।

ठ

ठगो मत ।

जीवन का पाठ सीखिए -
सियार तभी तक दूसरों को
ठग सकता है,
जब तक उसका शेर से
पाला न पड़े ।

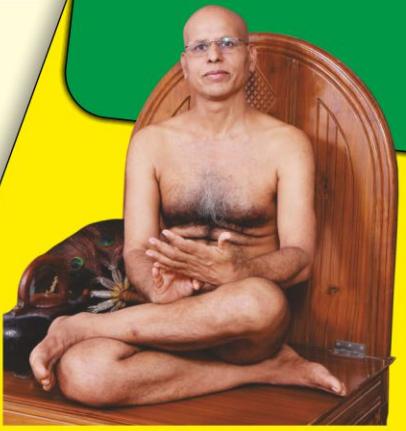

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

विशद अंदाज होना चाहिए अपनी बात कहने का ।
दिल में हौसला होना चाहिए औरों की बात सहने का ।।
'ठगो मत' अपनों के बीच रहकर कभी भी अपनों को।
नेक इरादे और सलीका होना चाहिए अपनों के साथ रहने का ।।

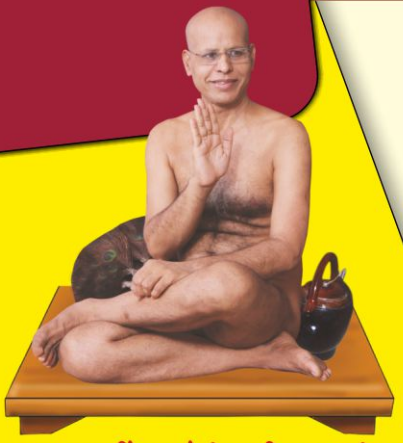

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

अपने लहू से लिखे हैं पैगाम इंसान के लिए ।
ये तुमको काफी नहीं, अपनी पहचान के लिए ।।
'डरो मत' हौसलों से आगे बढ़ो विशद जीवन में ।
बहुत छोटा है आसमां, अपनी उड़ान के लिए ।।

ड

से डरो मत ।

डरना यह सिखाता है-
जो डर गया, सो मर गया ।
डर एक ही बार लगता है,
मुकाबला करो,
तो आगे मंजिल जीत
की है ।

ढ

ढलना सीखो ।

ढलना सीखना है तो
रबर से सीखो,
जिसे कितना भी खींचा जाये,
वह अपना लचीलापन
नहीं छोड़ता ।

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

गमों को गले से लगाकर चलेंगे ।
जीवन में खार को सजाकर चलेंगे ।।
जिन्दगी खुद-ब-खुद सँवर जायेगी ।
'ढलना' सीखा है रिश्ते निभाकर चलेंगे ।।

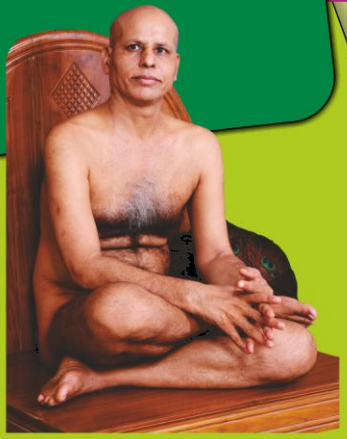

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

जमीं पे चाँद-सितारों का शहर देखा है हमने ।
न छत है न दीवारें ऐसा भी घर देखा है हमने ।।
'तत्पर रहो' हरपल आगे बढ़ने को क्योंकि ।
प्यासे के पास समन्दर को जाते देखा है हमने ।।

त

से तत्पर बनो ।

तत्परता का सिद्धान्त है -
लगे रहो लगन से ।
लगे और जमे रहने से
दुनियाँ मुट्ठी
में होती है ।

थ

थको मत ।

याद रखिये-तन थक जाये,
तो दो पल आराम कर लीजिए ।
पर मन थक जाये, तो किसी
महापुरुष या विद्वान को याद कर
लीजिए । जो अन्तिम स्वॉस तक
कार्य करने में सक्रिय रहे ।

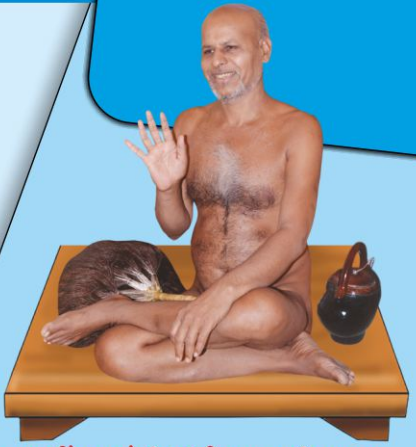

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

है इरादों में दम तो सफलतायें चलकर आयेंगी ।
जमाने से बचकर चले तो खूबियाँ उभर ही जायेंगी ।।
आपत्तियाँ खटखटाती हैं दरवाजा तो खटखटाने दो ।
'थको मत' मुश्किलों में भी विशद जिन्दगी सँवर जायेगी ।।

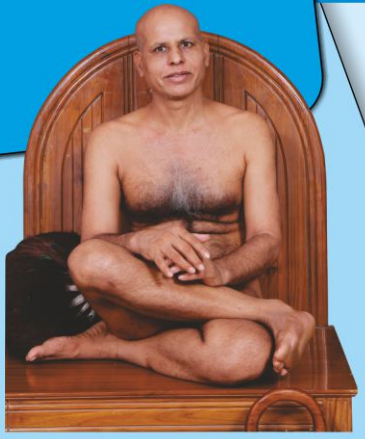

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

न हिन्दू न मुसलमान की बात कर ।
न पाक न हिन्दुस्तान की बात कर ।।
'दया' रख अपने अंतर में ये विशद ! ।
तू इंसान है तो इंसान की बात कर ।।

द

से दया करो ।

दया का अर्थ है -
तुम जमीन पर
रहने वालों पर दया करो,
आसमान में रहने वाला
तुम पर दया करेगा ।

ध

से धर्म करो ।

धर्म की एक ही भाषा है,
जिनसे हमने जन्म लिया है,
उसकी सेवा करना पहला धर्म है ।
इंसान होकर इंसान के काम आना
दूसरा धर्म है । अपनी कमजोरियों
पर विजय पाना आखिरी धर्म है ।

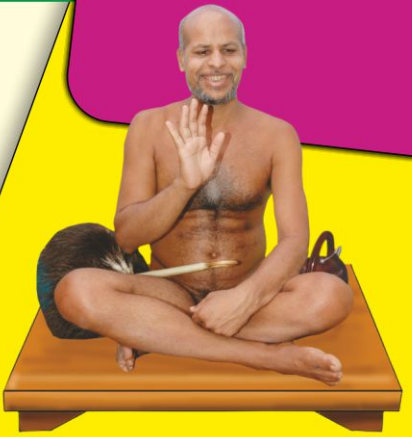

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

जिन्दगी में सभी स्वप्न साकार नहीं होते ।
आत्मा निराकार है उसके कोई आकार नहीं होते ।।
विशद 'धर्म करो' अपने जीवन में पावन ।
धर्मात्मा जन कभी भी गुनहगार नहीं होते ।।

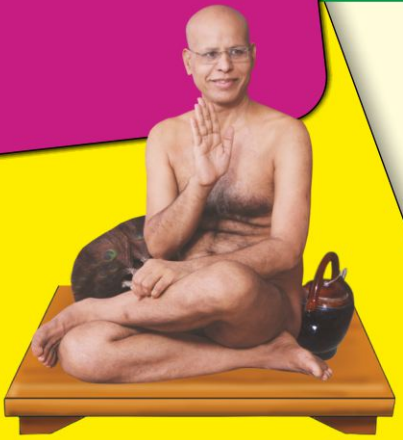

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

एक नया अन्दाज रख अपनी बात कहने का ।
अपने दिल में हौसला रख और की बात सहने का ।।
'नम्र' बनकर जीवन में जीना सीखो विशद ।
यही सहारा है लक्ष्य तक आगे बढ़ते रहने का ।।

न

नम्र बनों ।

नरमाहट यही सिखाती है-
अगर गर्मी रखोगे तो लोग
ए.सी. में बैठना पसन्द करेंगे ।
मगर नरमी रखोगे, तो
लोग तुम्हें ही ए.सी. समझेंगे ।

प

परिश्रम करो।

परिश्रम का पाठ है-कदम न उठाओ,
जब तक कोई चीज पहाड़ लगती है।
पर कदम उठने के बाद तो पहाड़
भी बौना हो जाता है।

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

जीवन की उलझनों में अगर उलझकर रह जायेगा।
हाथों में कुछ आना नहीं हाथ मलकर रह जायेगा।।
'परिश्रम करो' जीवन को पाकर प्यारे भाई।
तुम्हें क्या लगता है कि ये वक्त तुम्हारे लिए ठहर जायेगा ?।।

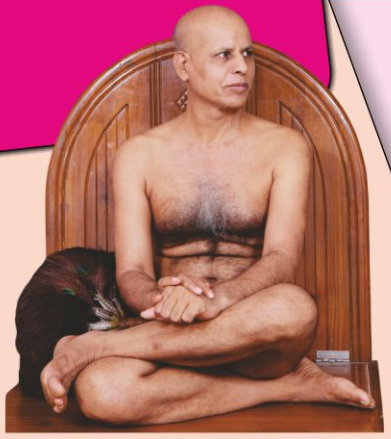

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

जिन चरणों में सदा चढ़ाए फूल रखते हैं ।
उन चरणों की सर पर लगाए धूल रखते हैं ।।
'फर्ज' निभाया है निभाते रहेंगे जीवन में ।
सुमेरू की तरह विशद अपने उसूल रखते हैं ।।

फ

से फर्ज निभाओ ।

फर्ज कहता है कि - फर्ज ऐसे
निभाओ कि लोग आपके माता-पिता !
से पूछें कि आपने ऐसा कौन सा
पुण्य किया कि आपके घर
ऐसी सन्तान पैदा हुई ।

ब

से बलवान बनों ।

बल सीख देता है -
अपने पास आत्म विश्वास
और एकता का बल रखिये,
दुनियाँ खुद-ब-खुद
आपके आगे झुकेगी ।

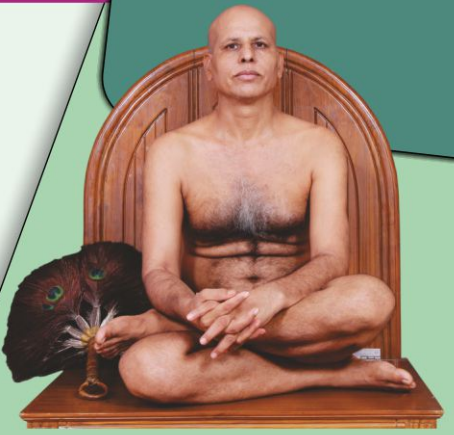

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

देने वाले ने भी क्या कम दिया है ?
अक्ल दी शक्ल दी क्या उपकार कम किया है ?
औरों पर बल नहीं 'बलवान' बनों विशद ।
जिन्दा वह है जिसने स्वयं जहर का घूंट पिया है ।।

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

महफिल का रंग तो अभी अधूरा है ।
मेरा मन नाच रहा विशद मयूरा है ।।
जिन्दगी में 'भलाई' करके तो देख ।
महफिल अवश्य जमेगी यह विश्वास पूरा है ।।

भ

भलाई करो।

भलाई की पढ़ाई सिखाती है- स्वर्ग में अपनी सीट का रिजर्वेशन करना है, तो हर रोज भलाई के दो काम जरूर कीजिए ।

म

से महान बनों ।

महानता का मंत्र है -
महान बनने के लिए
कर्म सदा निःस्वार्थ
भाव से कीजिये, आप अपने
आप महान बनते चले जायेंगे ।

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

ठहरो जरा सितारों को निकलने दो ।
तुम चलो और सबको साथ चलने दो ।।
'महान' बनो विशद दीप जलाकर के,
जो दीप जल रहे हैं उन्हें भी जलने दो ।।

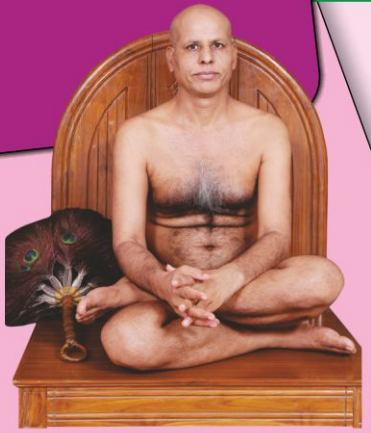

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

हरी डाल से उड़कर पंछी कभी नहीं जाते हैं ।
दुख में कोई कभी भी मल्हार नहीं गाते हैं ।।
'य़कीन' करो मुसाफिर डूबती कश्ती से विशद ।
अपना फिर कभी कोई रिश्ता नहीं निभाते हैं ।।

य

से यकीन करो ।

य़कीन हमें बताता है -
पहले खुद पर य़कीन कीजिए,
दूसरों पर य़कीन जितना
मजबूत होगा, उतना ही
कार्य प्रगति से होगा ।

र

से रहम करो

रहमदिली सिखाती है-
औरों की पीड़ा को देखकर,
उन पर रहम जरूर करो ।
हम कुछ नहीं बन पाये,
लेकिन एक रहमदिल इंसान
तो बन ही सकते हैं ।

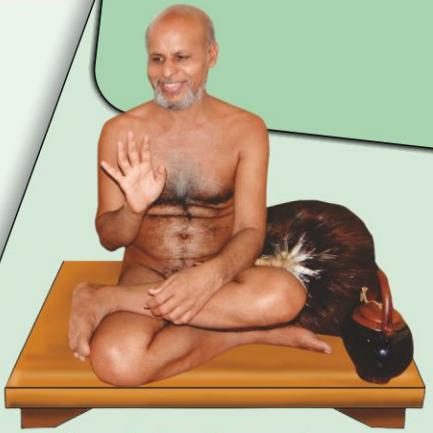

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

सच्चाईयों के रास्ते पर जरा चल के देखना ।
खामोशियों के बीच जरा टहल के देखना ।।
चर्चे होंगे सारे देश में खुशनुमां विशद ।
'रहम' के साथ किसी गली से गुजर के देखना ।।

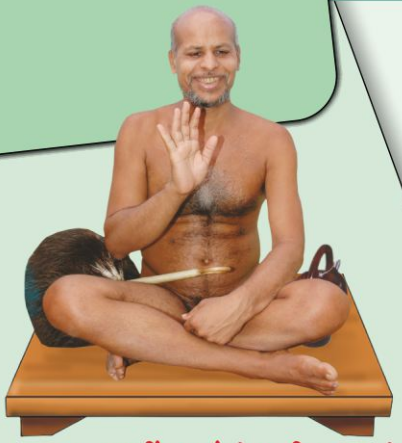

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

जमाने का डर तू अपने दिल से निकाल दे ।
जीवन को कामयाबी की कुछ ऐसी मिसाल दे ।।
गर दम है तो रेत के टीलों को रौंदकर 'लक्ष्य' प्राप्त करने का ।
देखता क्या है जमाने को विशद ठोकर देकर उछाल दे ।।

ल

लक्ष्य प्राप्त करो

लक्ष्य साधने का गुरुर है -
अपने हर वार को
इतना धारदार करो कि
आपको लगे हम
ओलम्पिक प्रतिस्पर्धा
में खड़े हैं ।

व

से वचन निभाओ।

वचन सिखाता है -
अपने वचन को इस तरह
निभाओ कि लोग
आपमें राम जी का अंश
देखने लगें।

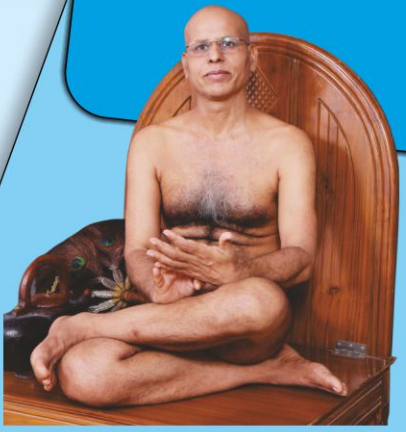

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

वतन परस्ती यूँ ही निभाने लगे हैं लोग ।
पैसों से फर्ज का बोझ उठाने लगे हैं लोग ।।
वे 'वचन' क्या निभायेंगे अपनी जिंदगी में विशद ।
जब खुद ही अपनी शाख गिराने लगे हैं लोग ।।

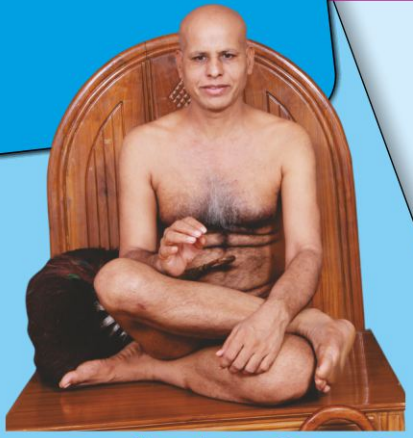

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

फूल तितलियों की बात हो तो चमन के रास्ते ।
भाईचारे की बात हो तो वतन के रास्ते ।।
जरा 'शर्म' करो स्वार्थ हेतु औरों को सताने वाले ।
ढूँढ़िये विशद और भी होंगे कई अमन के रास्ते ।।

श

से शर्म करो ।

शर्म सिखाती है -
जीवन में कभी कोई ऐसे
हल्के काम मत करो कि
हमारे माँ-बाप को दुनिया के
सामने शर्मिन्दा होना पड़े ।

ष

से षडयंत्र मत रचो।

षडयंत्र नहीं कीजिये-
जीवन में कभी भी षडयंत्र के
शकुनि मत बनो,
अन्यथा इतिहास में तुम
काले धब्बे की तरह
पहचाने जाओगे।

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

चंद रातें गुजारी सतरंगी सपनों के बीच ।
और सुनहरे दिन गुजारे हमने अपनों के बीच ।।
'षडयंत्र' मत रचो विशद अपनों के बीच ।
वरना फर्क क्या होगा अपनों और दुश्मनों के बीच ।।

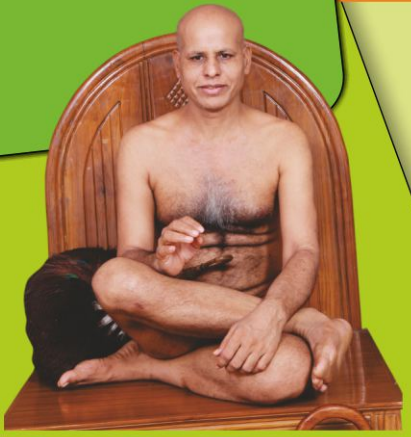

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

कर्म सेना के संग्राम में अकेले लड़ रहे हैं जो।
मोह महातम को तोड़कर आगे बढ़ रहे हैं जो।।
'समय के पाबन्द' रहते हैं सदैव ही जो।
'विशद' मोक्ष मंजिल की ओर अकेले ही बढ़ रहें हैं जो।

स

से समय के पाबंद बनो।

समय यही सिखाता है -
समय अच्छा जरूर
आता है,
पर समय पर
ही आता है।

ह

से हँसमुख बनों ।

हँसी के होंठ बोलते हैं-
अपने स्वभाव को इतना मधुर
और हँसमुख बनाओ कि
किसी को कहने की
जरूरत ही न पड़े -
स्माइल प्लीज ।

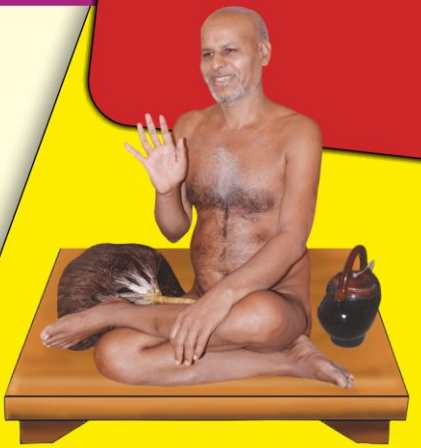

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

चमन वीरान लगते हैं जब टहनियाँ कटती हैं ।
शहर शोभित होता है जहाँ गलियाँ सजती हैं ।।
तुम 'हँसमुख' बनों विशद अपने जीवन में ।
हास्य कवि की भी बातों में बार-बार तालियाँ बजती हैं ।।

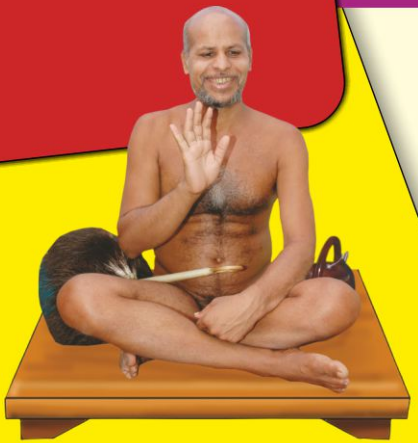

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

मँझधार में पतवार बना लेते हैं लोग ।
तिनके को तलवार बना लेते हैं लोग ।।
जो 'क्षमा' करना जानते हैं विशद ।
वे दुश्मनों को भी यार बना लेते हैं लोग ।।

क्ष

से क्षमा करो ।

क्षमा बोलती है -
असली बलवान वह नहीं होता,
जो दूसरों की गलती होने पर
बैर बनाकर बैठ जाता है ।
बल्कि जो औरों की गल्तियों
को क्षमा कर देता है ।

ज्ञ

से ज्ञानी बनों ।

ज्ञान आकाश का
इतना अनंत है कि
उड़ने को तू आजाद है ।
सागर की थाह है और
आकाश की सीमा है ।

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

जमाने को हमने ही चलना सिखाया है ।
दरिया को हम ही मचलना सिखाते हैं ।।
'ज्ञानी बनो' विशद जिन्दगी को पाकर अपनी ।
जिन्दगी में ज्ञानी ही सम्हलना सिखाते हैं ।।

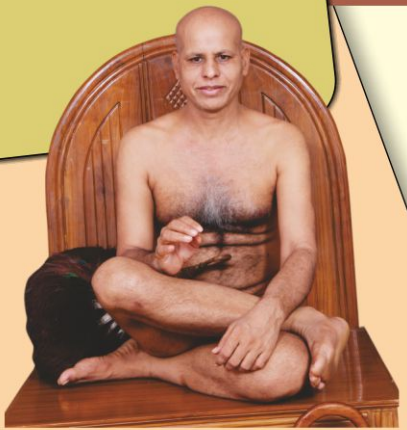

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

दर्द ही मिलेंगे तू कोई आस करके तो देख ।
कहाँ भटकता है अंतर के पास जा के तो देख ।।
'त्राहि' मत मचाओ औरों को कष्ट होगा ।
औरों की पीर का विशद अहसास करके तो देख ।।

त्र

से त्राहि मत मचाओ ।

त्राहि देती है - सीख दुनियाँ में
आतंक और त्राहि मचाने से
कुछ नहीं मिलता ।
अंततः हर किसी को
अहिंसा और शान्ति की
शरण में आना होगा ।

ऋ

ॐ

से ऋषि बनो।

ऋद्धि प्राप्त
करके स्वपर उपकार
करते हैं।

परमेष्ठी वाचक है।

ॐकार में लीन रहकर
हमेशा विशद ज्ञानी बनकर
आत्म ध्यान करते रहें।

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108
विशदसागर जी महाराज

कब ढली शाम कब हुआ सबेरा याद नहीं जिनको।
कहाँ रहते हैं खुद का बसेरा याद नहीं जिनको ॥
'ऋषि' स्वयं ही स्वयं में खो जाते हैं विशद।
कौन है तेरा कौन है मेरा याद नहीं जिनको ॥

जो साधना से जीवन सजाने की तमन्ना रखते हैं।
जो मोक्ष महल में जाने की तमन्ना रखते हैं॥
'ॐकार' में लीन रहते हैं हमेशा 'विशद'।
जो आत्मा को कुन्दन बनाने की तमन्ना रखते हैं॥